बस्तों की बंदोबस्ती

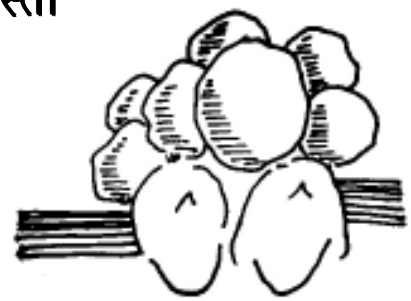

चूजा
फड़फड़ा लेता है पंख
बीन लेता है
दाना तुनका
नहा भी लेता है
रेत में
मां की तरह।
आकार संभाल कर
अपने ही पैरों से
भर लेता है उड़ान
दूर आसमान में।
सीख ही लेता है वह
अपने कुटुम्ब कबीले की बोली
भाषा और व्याकरण।
खूंखार पक्षियों
जांखार पशुओं के
नापाक इरादों को भांप
बच निकलना
सीख ही लेता है
बिन पाठशाला
और
अनुशासन का डंडा थामे
शिक्षक के बिना।
वह कभी भी
नहीं उठाता
भारी भरकम बस्ता
नहीं पलटता
पाठ्यक्रमी पोथों के पन्ने।
फिर क्यों है
बंदों की बस्ती में
नन्हे-मुन्नों के लिए
भारी बस्तों की बंदोबस्ती।

ओम पुरोहित 'कागद'
24, दुर्गा कॉलोनी,
हनुमानगढ़ संगम-335512 राजस्थान